International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-12-2020; Accepted: 24-12-2020; Published: 11-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 09-12

नवीन कृषि तकनीक एवं कृषक समाज बलरामपुर जनपद के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

देव नारायण पांडेय[1], डॉ. मीनू मिश्रा[2]

[1] शोध छात्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है, कृषि भारतीय समाज की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक सांस्कृतिक स्वरूप की आधारशिला है । नवीन कृषि तकनीक कृषि के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन लाने में योगदान दिया है । बलरामपुर जनपद में नवीन कृषि तकनीक के प्रति जागरूकता का स्तर मुख्य रूप से कृषकों के शैक्षणिक स्थिति तथा कृषि जोत का आकार पर निर्भर करती है । बलरामपुर जनपद का सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि बड़े जोत एवं मध्यम जोत आकार वाले कृषिक नवीन कृषि तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं । ऐसे कृषकों के पास ट्रैक्टर, रोटावेटर,सीड ड्रील मशीन तथा नकदी फसल के रूप में सब्जियों, केला, गन्ना आदि की खेती करते हैं। अध्ययन क्षेत्र के बड़े जोत आकार वाले एवं उच्च शिक्षित कृषक नवीन कृषि तकनीक को आसानी से ग्रहण कर लेते हैं तथा लघु एवं सीमांत कृषक कृषि समाचारों को देरी से ग्रहण करते हैं । नवीन कृषि तकनीक आ जाने से संयुक्त परिवार नाभिक परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं तथा मुखिया का परिवार पर नियंत्रण कमजोर हो रहा है ।

मूलशब्द: नवीन कृषि तकनीक: कृषि से सम्बन्धित नए कृषि यंत्र, नाभिक परिवार: एकल परिवार, परंपरागत तकनीक: पहले से प्रयोग किये जा रहे कृषि उपकरण, वानिकी: व्यवसाय या आर्थिक लाभ के लिए पेड़ लगाना ।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है । जनगणना 2011 के अनुसार 68.90% जनसंख्या गांव में निवास करती है । इस प्रकार कृषि भारतीय समाज की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक सांस्कृतिक स्वरूप की आधारशिला है । कृषि क्षेत्र में नवीन कृषि तकनीक एक ऐसा तकनीकी कारक है जिसने जीवन में अनेक परिवर्तन लाने में योगदान दिया है । पशुओं की नस्ल उर्वरकों के प्रयोग बीजों के प्रकार, सिंचाई के साधनों तथा कृषि यंत्रों में सुधार हो जाने से कृषि उत्पादन मात्रा एवं गुण दोनों ही दृष्टि से वृद्धि हुई है । पहले जब कृषि जीविकोपार्जन के लिए की जाती थी तो अन्य व्यक्तियों से सहयोग की आवश्यकता पड़ती थी। जिससे ग्रामीणों में सामूहिक ता का महत्व बना हुआ था अब शर्म बचत करने वाली मशीनों के प्रयोग से व्यक्ति को कृषि कार्यों में अन्य व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता कम पड़ती है । इसे सामूहिक ता के बजाय व्यक्तिवाद तथा संयुक्त के जगह नाभिक परिवारों के महत्व को बढ़ाया है लोग किसी व्यावसायिक उद्देश्य करने लगे हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के आय में वृद्धि हुई है। उनके रहन-सहन जीवन शैली में परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार कृषि की नवीन तकनीकी ने कृषकों के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्वरूपों को प्रभावित किया है ।

उद्देश्य

1. कृषक समाज में कृषि तकनीकी के प्रति जागरूकता स्तर का अध्ययन करना ।
2. बदलते भू संबंधों को ज्ञात करना ।
3. कृषि प्रौद्योगिकी का कृषक समाज के संरचना और संस्कृति में परिवर्तन का अध्ययन करना ।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के देवीपाटन मंडल का जनपद बलरामपुर है । जो नेपाल सीमा से लगा हुआ है। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश के अति पिछड़े जिले में से एक है। इस जनपद की कुल जनसंख्या 21.48 लाख है। जिसमें से 93.30% जनसंख्या ग्रामीण है जो यह दर्शाता है कि यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आश्रित

है।

अध्ययन क्षेत्र में नवीन कृषि तकनीक के प्रति जागरूकता का स्तर मुख्य रूप से कृषकों के शैक्षणिक स्थिति तथा कृषि जोत का आकार पर निर्भर करती है । अध्ययन क्षेत्र का सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि बड़े जोत एवं मध्यम जोत आकार वाले कृषिक नवीन कृषि तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं । ऐसे कृषकों के पास ट्रैक्टर, रोटावेटर,सीड ड्रील मशीन तथा नकदी फसल के रूप में सब्जियों, केला, गन्ना आदि की खेती करते हैं। वही लघु एवं सीमांत कृषक आज भी अधिकांशत: परंपरागत तकनीक से खेती करते हैं। सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों से यह भी ज्ञात हुआ है कि कृषकों के शिक्षा स्तर एवं जागरूकता का स्तर में धनात्मक सहसंबंध है। क्योंकि जो कृषक शिक्षित हैं वे कृषि नवाचारों को आसानी से ग्रहण कर लेते हैं ।ऐसे कृषक जो कम शिक्षित या अशिक्षित हैं वह कृषि नवाचारों को दूसरे कृषकों को इससे होने वाले लाभ को देखकर ग्रहण करते हैं ।

अध्ययन क्षेत्र में जब कृषि की नई तकनीक का प्रयोग नहीं किया जाता था, तब परंपरागत फसलों यथा गेहूं, धान, सरसों, मटर, चना, मसूर की खेती की जाती थी । वर्तमान समय में नवीन कृषि तकनीक के आ जाने से कृषि भू-संबंधों में परिवर्तन आ गया है । अध्ययन क्षेत्र के कृषि व्यवसाय कृषि की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। व्यवसायिक कृषि के अंतर्गत मुख्य रूप से सब्जियों, फलों, गन्ने की खेती की जा रही है । जिससे कृषको की आय में कई गुना की वृद्धि हुई । एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाते हुए बहुत से कृषक तालाब की खुदाई कराकर मछली पालन, अच्छे नस्ल की गाय एवं भैंस का पालन, बकरी पालन आदि कर रहे हैं । बकरी पालन का कार्य मुख्य रूप से लघु एवं सीमांत कृषक कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वानिकी का प्रयोग करते हुए कृषक अपने खेत के चारों ओर सागौन, यूकेलिप्टस आदि के वृक्ष लगा रहे हैं । जिससे कृषकों को अधिक आर्थिक लाभ अधिक हो रहा है ।

नवीन कृषि तकनीक के प्रयोग से कृषक समाज के सामाजिक संरचना और संस्कृति में काफी परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

शोध अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि भारतीय ग्रामीण समाज की प्रमुख विशेषता संयुक्त परिवार है । जिसके परंपरागत स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है । आज संयुक्त परिवार नाभिक परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं । इसके साथ ही संयुक्त परिवार के मुखिया का परिवार पर नियंत्रण अब नहीं रह गया है । कृषि में कृषि यंत्रों के अधिक प्रयोग से सामूहिकता के स्थान पर व्यक्तिवादिता बढ़ने लगा है।

परंपरागत व्यवसाय पर प्रभाव

परंपरागत समाज में सभी व्यक्तियों के पेशे के निर्धारण में जाति नामक संस्था का प्रमुख स्थान रहा है । किसी जाति विशेष में जन्म लेने के बाद ही उसके व्यवसाय का निर्धारण हो जाता था । जैसे ब्राह्मण का व्यवसाय पुरोहित, धोबी का कार्य लोगों के कपड़े धुलना, नाई का कार्य बाल बनाना, लोहार का कार्य कृषि एवं पारिवारिक उपकरणों को बनाना एवं मरम्मत करना । नवीन कृषि तकनीक का प्रयोग करने से लोगों के परंपरागत व्यवसाय में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। आज दूध बेचने का कार्य केवल यादव ही नहीं करते बल्कि अन्य जातियां भी करती है । मछली पालन का आकार सभी जातियों के लोग करते हुए दिखाई देते हैं । ब्राम्हण, क्षत्रिय, कायस्थ जैसी सामान्य जातियां खेत की जुताई करने में अपने सम्मान के खिलाफ मानती रहे हैं। ट्रैक्टर आ जाने से इस जाति के लोग भी स्वयं खेत की जुताई करते हैं । वर्तमान समय में किसी भी जाति का व्यक्ति कोई भी व्यवसाय अपना सकता है ।

स्त्रियों की स्थिति पर प्रभाव

परंपरागत भारतीय ग्रामीण समाज में स्त्रियों कोस्वयं से धन अर्जन करने की छूट नहीं थी। घर से बाहर तथा परिवार के अंदर कुछ विशेष सदस्यों से पर्दा प्रथा करनी पड़ती थी। तेज आवाज में बात नहीं कर सकती थी । वर्तमान समय में शिक्षा का प्रचार तथा औद्योगिक एवं नगरीय संस्कृति के फल स्वरुप स्त्रियों के परंपरागत स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिल रहा है । नवीन कृषि तकनीक का प्रयोग करने वाले परिवारों की स्त्रियों द्वारा बड़े बुजुर्गों से पर्दा प्रथा का चलन कम हो गया है । जेठ और ससुर से पर्दा करने की कठोरता में कमी आई है । इसके अतिरिक्त स्त्रियां नौकरी और व्यवसाय के लिए घर की चारदीवारी से बाहर जाने लगी । इसका कारण नवीन कृषि तकनीक बनाने वाले परिवारों का शिक्षा स्तर उच्च होना । संचार एवं परिवहन के साधनों का विकास होने से परिवार के सदस्यों की चुनौतियों में परिवर्तन हो रहा है । विकास होने से कृषि परिवार के सदस्यों की मनोवृति ओं में परिवर्तन हो रहा है ।

रहन-सहन का स्तर

नवीन कृषि तकनीक को अपनाने वाले कृषकों के मकान पक्की ईट के बने हुए हैं तथा घर में शौचालय की सुविधा भी है। लघु एवं सीमांत कृषकों के मकान पक्की ईट लेकिन जुड़ाई मिट्टी से हुई है तथा अन्य लोगों के घर छप्पर के बने हैं। नवीन कृषि तकनीक अपनाने वाले कृषक भोजन बनाने के लिए गैस चूल्हे

का प्रयोग करते हैं । घरेलू सामानों के रूप में कूलर, पंखा, फ्रिज, फर्नीचर जैसे भौतिक वस्तुओं का उपयोग करते हैं ।

परिवहन के साधन

कृषक समाज के सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि परिवहन ही कृषक समाज को औद्योगिक एवं नगरीय संस्कृति के संपर्क में लाता है। जब अध्ययन क्षेत्र में परिवहन की अच्छी सुविधाएं नहीं थी। सड़कें कच्ची एवं गड्ढे से युक्त हुआ करती थी तो लोगों को पैदल बाजार जाना पड़ता था। कुछ ही लोगों के पास निजी साधन हुआ करता था। वर्तमान समय में परिवहन की सुविधाओं में व्यापक परिवर्तन हुआ है। नवीन कृषि तकनीक का प्रयोग करने वाले लगभग सभी कृषकों के पास दो पहिया वाहन है तथा कुछ लोगों के पास साधन के रूप में साइकिल या बैलगाड़ी है।

खानपान

बदलते आधुनिक सामाजिक शक्तियों के साथ ग्रामीण समाज के खानपान में भी काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। पहले कृषक परिवार की स्त्रियां चकिया के द्वारा गेहूं पीस दी थी और चोकर युक्त आटे से रोटी बनाती थी धान को उबालकर उसको सिखाया जाता था। उसके बाद चावल निकाला जाता था जिससे चावल का भी पौष्टिक होता था । इस प्रकार के चावल को स्थानीय भाषा में भुजिया का चावल कहा जाता है । आज गांव के लोग बिना पालिश का चावल आटा मिल द्वारा पिसा हुआ महीना का डिब्बे में मिलने वाला बैल कोल्हू का तेल प्रयोग किया जा रहा है । इसके अतिरिक्त खानपान में मैगी, चाऊमीन, माइक्रोनी, पिज्जा, बर्गर जैसे जंक फूड को गांव में बड़े चाव से खाया जा रहा है ।

विवाह

पूर्व में कृषक समुदाय के लोग अपने बच्चों का विवाह बचपन में ही कर दिया करते थे लेकिन वर्तमान समय में बाल विवाह का प्रचलन अब नहीं रह गया है विवाह किसी मध्यस्थ या स्वयं वर वधु के माता-पिता तय करते थे विवाह का प्रस्ताव सबसे पहले वधू पक्ष को रखना पड़ता था माता-पिता जिस लड़की से विवाह कर देते थे लड़के को मानना पड़ता था लड़की देखने का प्रचलन पहले नहीं था कुछ संपन्न परिवारों में था लेकिन इनकी संख्या बहुत कम थी वर्तमान समय में विवाह के इस स्वरूप में परिवर्तन दिखाई दे रहा है आज भी माता-पिता शादी तय करते हैं लेकिन लड़के एवं लड़कियां भी अपने मनपसंद विवाह की इच्छा करने लगे हैं तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से माता-पिता भाभी या किसी रिश्तेदार के द्वारा अपने पसंद की सूचना भेज देते हैं

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद बलरामपुर में नवीन कृषि तकनीक तथा कृषक समाज से संबंधित अध्ययन का प्रयास है । कृषि क्षेत्र में उन्नतशील बीज उर्वरक सिंचाई के उन्नतशील साधन कृषि यंत्रीकरण पशुओं की अच्छी नस्ल आज के प्रयोग से कृषक समाज में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है । अध्ययन क्षेत्र के बड़े जोत आकार वाले एवं उच्च शिक्षित कृषक नवीन कृषि तकनीक को आसानी से ग्रहण कर लेते हैं । तथा लघु एवं सीमांत कृषक कृषि समाचारों को देरी से ग्रहण करते हैं अध्ययन क्षेत्र के कृषक परंपरागत फसलों की तुलना में व्यवसाई फसलों जैसे गन्ना सब्जियों फलों आदि की खेती की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं । इसके अतिरिक्त मछली पालन डेयरी उद्योग बकरी पालन वानिकी आज ही कर रहे हैं । नवीन कृषि तकनीक आ जाने से संयुक्त परिवार नाभिक परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं तथा मुखिया का परिवार पर नियंत्रण कमजोर हो रहा है । जाति आधारित परंपरागत व्यवसाय में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

इस समय किसी भी जाति का व्यक्ति कोई भी व्यवसाय कर सकता है । वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। पर्दा प्रथा का धीरे-धीरे लोप हो रहा है। शिक्षा की स्थिति अच्छी होने पर आज स्त्रियां व्यवसाय के लिए घर की चारदीवारी से बाहर जा रही हैं । आज गांव में भोजन बनाने के लिए गैस चूल्हे का प्रयोग हो रहा है। घरेलू सामानों के रूप में पंखा कूलर फ्रिज आज का उपयोग किया जा रहा है। खान-पान वेशभूषा में भी नगरीय संस्कृति का प्रभाव दिखाई दे रहा है।

बाल विवाह का प्रचलन धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है तथा विवाह के परंपरागत स्वरूप में आज कृषक समाज के परिवार में परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

सन्दर्भ-सूची

1. सेन्सस ऑफ़ इण्डिया (2011), जिला सेन्सस हैण्ड बुक बलरामपुर
2. ओपन नौकरी) 2019 (भारत की कृषि का इतिहास https://www.opennaukri.com/history-of-agriculture-in-india/
3. कृषि जागरण) 2018 (कृषि विकास, नई तकनीक से ही सभव ,!

https://hindi.krishijagran.com/news/agricultural-development-only-new-technology/
4. वासुदेव मीणा)2017 (सिंचाई प्रणालियों की आवश्यकता और उनके प्रकार ,कुरुक्षेत्र, नवम्बर 2017
5. देवाशीष उपाध्याय) ,2018 ,(कृषिगत आधारभूत अवसंरचना ,कुरुक्षेत्र, अगस्त, 2018
6. डॉ .केके त्रिपाठी(2019), कृषि क्षेत्र में बुनियादी ढाँचागत सुधारडॉ .केके त्रिपाठी ,कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 2019
7. कृषि जागरण) 2018(,कृषि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की भूमिका, https://hindi.krishijagran.com/editorial/role-of-information-and-communication-technologies-in-agriculture/
8. किरण) 2017 ,(आर्थिक विकास में परिवहन की भूमिका https://kirankumarimth.blogspot.com/2017/11/blog-post.html
9. डा.हरेकृष्ण सिंह, डा.सतीश कुमार शर्मा(1993), ग्रामीण विकास में ग्रामोद्योग ,योजना, 15 अक्टूबर, 1993